।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

फिजूल खर्ची पर मुख्यमंत्री को दिया संदेश
आर्थिक विषमता को आचार्य महाप्रज्ञ ने देश की सुरक्षा को चुनौती देने वाली बताया

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 13 फरवरी : आचार्य महाप्रज्ञ ने फिजूलखर्ची पर समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुए पीछले वर्ष के जुलाई महिने में देश के ख्यातनाम राजनीतिज्ञों को संदेश प्रेषित किया था। उस संदेश में आचार्य महाप्रज्ञ ने सामजिक विषमता और आर्थिक विषमता को देश की शांति और सुरक्षा को चुनौति देने वाली बताया था। उन्होने आज समाचार पत्रों में फिजूलखर्ची के सन्दर्भ में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के वक्तव्य को पढ़ने के बाद फिर से उसी संदेश को मुख्यमंत्री को भेजने का कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने सन्देश में न केवल असीम उपभोग से बढ़ने वाली समस्या पर ही ध्यान आकृष्ट किया है, बल्कि आयकर और उपभोग कर दोनों का एक साथ प्रयोग किये जाने के सन्दर्भ मे गंभीर प्रश्न उपस्थित किये है। यह प्रश्न ठीक बजट सत्र के पहले सामने आये हैं जो एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। संदेश में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा है कि– आज मैं एक जटिल समस्या पर समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं, जो समस्या निकट भविष्य में राष्ट्र की शांति और सुरक्षा को चुनौती दे सकती है। वर्तमान में राष्ट्र के भीतर पनपने वाले आतंकवाद और अराजकता फैलाने वाले संगठन बढ़ रहे हैं। इसका मूल कारण सामाजिक विषमता है, आर्थिक विषमता है।

मैं यह जानता हूं कि आर्थिक विषमता को मिटाया नहीं जा सकता। भूख और पानी की समस्या को सुलझाया जा सकता है। गरीबी को मिटाने की दिशा में कदम आगे बढ़ाये जा सकते हैं। किन्तु वर्तमान की अर्थनीति से वह कार्य संभव नही हो रहा है।

किस व्यक्ति के पास कितना धन है, यह बड़ी समस्या नहीं है। बड़ी समस्या यह है कि कौन व्यक्ति कितना उपभोग करता है, कितना खर्च करता है, कितना प्रदर्शन करता है। बड़े धनाधीश और सत्ताधीस जिस प्रकार का अतिरिक्त उपभोग कर रहे हैं, अपव्यय और प्रदर्शन कर रहे हैं, उससे मध्यम वर्ग के लोगों में और विशेषतः गरीबी और भूखमरी से पीड़ित लोगों में प्रतिक्रियात्मक हिंसा पैदा हो रही है और आतंकवाद और उग्रवाद को जन्म दे रही है।

मैं मानता हूं कि इस समस्या से कोई भी विचारशील व्यक्ति अनजान नहीं है। अब हमें इस समस्या के समाधान की दिशा में नया चिंतन करना चाहिए। मैं कुछ प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूं–

1. क्या सुरसा के मुंह की तरह बढ़ते हुए उपभोग पर नियंत्रण किया जा सकता है ?
2. आयकर को उपभोग कर में बदलने का चिंतन चला था। क्या वह आज प्रासंगिक बन सकता है अथवा नहीं ?
3. क्या आयकर और उपभोग कर दोनों का एक साथ प्रयोग किया जा सकता है ?

ये गंभीर प्रश्न हैं इन पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। केवल चिंतन ही नहीं इस पर चर्चा होना जरुरी है।

मैं सोचता हूं कि समाज व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए नए कदम उठाने आवश्यक होते हैं। इस प्रयोग से प्रतिक्रियात्मक हिंसा में कमी आ सकती है। धन के दुरुपयोग की दिशा भी बदल सकती है। हिंसा के और भी अनेक रास्ते बंद हो सकते हैं। राष्ट्र के 10–20 करोड़ बड़े लोगों में होने वाला दिशा–परिवर्तन राष्ट्र के 80–90 करोड़ लोगों में नया रक्त संचार कर सकता है।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक